IGNOU IQ HINDI

SOLVED ASSIGNMENT

2025-26

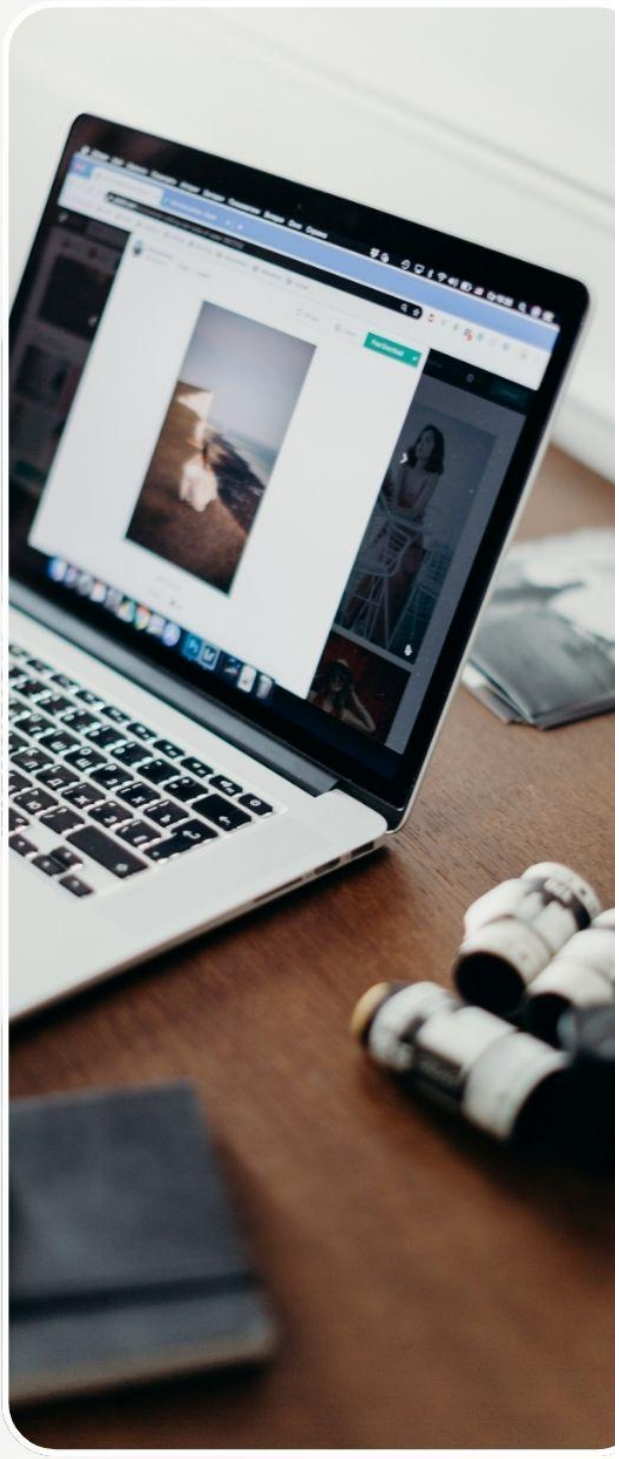

Your journey to success begins here join our comprehensive online course.

CONTACT US

6205717642/8521027286

ignouiqinfo@gmail.com

This PDF of 'IGNOU IQ Hindi' is not for selling or sharing, otherwise legal action can be taken against you.

ASSIGNMENT

BPSC - 105

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

PDF By Suraj Kumar Sir (8521027286/6205717642) .....visit our website www.ignouiqhindi.com

हमारे यहाँ Handwritten Assignments/Synopsis/Project बनाया जाता है - 62057107642/8521027286

BPSC-105: तुलनात्मक सरकार और राजनीति का परिचय अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोड: BPSC-105

सत्रीय कार्य कोड: BPSC-105/ASST/TMA/2025-26

अधिकतम अंकः 100

यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

BPSC-105: तुलनात्मक सरकार और राजनीति का परिचय
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

पाठ्यक्रम कोडः **BPSC-105**
सत्रीय कार्य कोडः **BPSC-105/ASST/TMA/2025-26**
अधिकतम अंकः **100**

यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं। आपको तीनों भागों के सभी प्रश्नों के उत्तर देने हैं।

सत्रीय कार्य-I

निम्न वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) तुलनात्मक राजनीति (Comparative Politics) की प्रकृति और विकास का वर्णन कीजिए।

2) ब्राज़ील और नाइजीरिया के संदर्भ में संघवाद (Federalism) के सिद्धांत और व्यवहार का मूल्यांकन कीजिए। उपनिवेशोत्तर संघीय लोकतंत्रों के अनुभव से हमें क्या अंतदृष्टियाँ मिलती हैं?

सत्रीय कार्य-II

निम्न मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) तुलनात्मक राजनीति में संस्थागत दृष्टिकोण (Institutional Approach) की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

4) ब्रिटिश संविधान व्यवस्था में कानून के शासन (Rule of Law) के महत्व और सीमाओं पर चर्चा कीजिए।

5) निर्भरता सिद्धांत (Dependency Theory) के संदर्भ में ब्राज़ील द्वारा अपनाई गई विकास रणनीतियों का परीक्षण कीजिए।

सत्रीय कार्य-III

निम्न लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) राजनीतिक समाजीकरण और राजनीतिक संस्कृति (Political Socialisation and Political Culture)

7) समकालीन समय में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

8) उदारवादी बनाम समाजवादी लोकतंत्र (Loberal vs. Socialist Democracy)

9) ब्रिटिश संसद में लॉर्ड्स सभा (House of Lords) की भूमिका

10) वालरस्टीन का वर्ल्ड सिस्टम विश्लेषण (Wallerstein's World System Analysis)

सत्रीय कार्य-1

निम्न वर्णनात्मक श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1) तुलनात्मक राजनीति (Comparative Politics) की प्रकृति और विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर : तुलनात्मक राजनीति (Comparative Politics) की प्रकृति विभिन्न देशों की राजनीतिक प्रणालियों, संस्थाओं और व्यवहारों का व्यवस्थित तुलनात्मक अध्ययन करना है, जो पारंपरिक वर्णनात्मक से निकलकर आधुनिक, वैज्ञानिक और अंतःविषय (interdisciplinary) बन गई है, जहाँ यह राजनीतिक प्रक्रियाओं को समझने के लिए समाजशास्त्र, मनोविज्ञान जैसे अन्य विषयों की मदद लेती है और विकास के साथ इसका दायरा केवल सरकारों से बढ़कर सामाजिक-राजनीतिक व्यवहार और वैश्वीकरण के प्रभावों तक फैल गया है।

तुलनात्मक राजनीति की प्रकृति (Nature)

- **वैश्विक परिप्रेक्ष्य:** यह विभिन्न देशों की राजनीतिक प्रणालियों और व्यवहारों की तुलना करके वैश्विक राजनीति को समझने का प्रयास करती है।
- **विश्लेषणात्मक और वैज्ञानिक:** यह केवल वर्णन नहीं करती, बल्कि राजनीतिक व्यवस्थाओं के बीच कार्य-कारण संबंधों (cause-effect) को खोजने और सामान्य सिद्धांतों (general theories) का निर्माण करने की कोशिश करती है।
- **अंतःविषय (Interdisciplinary):** यह राजनीति के साथ-साथ समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और अर्थशास्त्र जैसे अन्य सामाजिक विज्ञानों के सिद्धांतों और पद्धतियों का उपयोग करती है।
- **व्यापक दायरा:** यह पारंपरिक 'तुलनात्मक सरकार' (संस्थाओं का अध्ययन) से आगे बढ़कर राजनीतिक व्यवहार, दबाव समूहों, हित समूहों और गैर-राजनीतिक कारकों (जैसे संस्कृति) को भी शामिल करती है।
- **अनुभवजन्य (Empirical):** यह वास्तविक दुनिया के डेटा और अनुभवों पर आधारित है, न कि केवल आदर्शवादी विचारों पर।

तुलनात्मक राजनीति का विकास (Evolution)

1. **परंपरागत चरण (द्वितीय विश्व युद्ध तक):**

जनक: अरस्तू को इसका जनक माना जाता है, जिन्होंने 158 संविधानों का अध्ययन किया।

फोकस: मुख्य रूप से औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं (जैसे संसद, राष्ट्रपति) और उनके कानूनी पहलुओं पर केंद्रित था (तुलनात्मक सरकार)।

पद्धति: वर्णनात्मक और कानूनी-ऐतिहासिक थी; पश्चिमी यूरोपीय प्रणालियों पर अधिक ध्यान दिया गया।

2. **आधुनिक चरण (द्वितीय विश्व युद्ध के बाद):**

व्यवहारवादी क्रांति (Behavioral Revolution): व्यवहारवाद के उदय ने राजनीतिक व्यवहार के वैज्ञानिक अध्ययन पर जोर दिया, जिससे तुलनात्मक राजनीति में कार्य-कारण संबंध और व्यवस्थित अध्ययन की शुरुआत हुई।

तीसरी दुनिया का उदय: शीत युद्ध के बाद नए राष्ट्रों (एशिया, अफ्रीका, लैटिन अमेरिका) के अध्ययन ने दायरे को व्यापक बनाया।

अंतःविषय दृष्टिकोण: समाजशास्त्र, मनोविज्ञान और अर्थशास्त्र से नए सिद्धांत और तरीके अपनाए गए।

संस्थागत और गैर-संस्थागत अध्ययन: संस्थागत ढांचे के साथ-साथ राजनीतिक दलों, दबाव समूहों और सामाजिक आंदोलनों का भी अध्ययन किया जाने लगा।

3. **समकालीन चरण (वैश्वीकरण के बाद):**

वैश्वीकरण का प्रभाव: वैश्वीकरण ने राजनीतिक प्रक्रियाओं को प्रभावित किया, जिससे तुलनात्मक राजनीति अब वैश्विक नेटवर्क, अंतर्राष्ट्रीय संगठनों और वैश्विक नागरिक समाज का अध्ययन करती है।

नए मुद्दे: लोकलुभावनवाद (populism), मानवाधिकार और लोकतंत्र के संक्रमण (democratization) जैसे समकालीन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

संक्षेप में, तुलनात्मक राजनीति एक गतिशील क्षेत्र है जो राजनीतिक दुनिया को समझने के लिए विभिन्न राजनीतिक व्यवस्थाओं के बीच समानताएं और अंतर खोजने के लिए एक व्यवस्थित, वैज्ञानिक और व्यापक दृष्टिकोण अपनाता है, और समय के साथ इसका दायरा विकसित हुआ है।

2) ब्राजील और नाइजीरिया के संदर्भ में संघवाद (Federalism) के सिद्धांत और व्यवहार का मूल्यांकन कीजिए। उपनिवेशोत्तर संघीय लोकतंत्रों के अनुभव से हमें क्या अंतर्दृष्टियाँ मिलती हैं?

उत्तर : ब्राजील और नाइजीरिया के संघवाद का मूल्यांकन दर्शाता है कि दोनों देश विविधता प्रबंधन के लिए संघवाद को अपनाते हैं, लेकिन ब्राजील विकेंद्रीकरण और स्थानीय स्वायत्तता पर केंद्रित है (1988 के संविधान के बाद), जबकि नाइजीरिया, अपनी जातीय-धार्मिक जटिलताओं के कारण, 'संघवाद-विहीन संघ' के रूप में केंद्रीकृत और एकात्मक प्रवृत्तियों के साथ एक 'होल्डिंग टुगेदर' मॉडल का उदाहरण है, जिससे अस्थिरता आती है। उपनिवेशोत्तर अनुभवों से यह सीख मिलती है कि सफल संघवाद के लिए संविधान, शक्ति संतुलन और संसाधनों के न्यायसंगत वितरण के साथ-साथ क्षेत्रीय/जातीय आकांक्षाओं को समायोजित करने वाले लचीले संस्थागत ढाँचे और निरंतर बातचीत आवश्यक है, अन्यथा यह राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा बन सकता है।

ब्राजील: विकेंद्रीकरण और क्षेत्रीय विविधता

- **सिद्धांत:** विशाल क्षेत्र और विविधता को देखते हुए, 1988 के संविधान ने संघवाद को अपनाया, जिससे राज्यों और नगर पालिकाओं को अधिक शक्ति मिली, जिसका उद्देश्य सेवा वितरण और स्थानीय भागीदारी को बढ़ाना था।
- **व्यवहार:** विकेंद्रीकरण ने स्थानीय जरूरतों के अनुसार नीतियां बनाने में मदद की, लेकिन क्षेत्रीय असमानताओं, राजकोषीय असंतुलन और केंद्रीय व राज्य स्तरों के बीच शक्ति के संतुलन को बनाए रखने में चुनौतियां बनी रहीं।

नाइजीरिया: केंद्रीकरण और जातीय-धार्मिक तनाव

- **सिद्धांत:** उपनिवेशवाद के बाद जातीय अल्पसंख्यकों की चिंताओं के कारण संघवाद को अपनाया गया, लेकिन यह 'होल्डिंग टुगेदर' मॉडल था, जहां जातीय-भाषाई विभाजन के कारण केंद्रीयकरण की प्रवृत्ति हावी रही।

- **व्यवहार:** व्यवहार में, नाइजीरिया अक्सर एक एकात्मक राज्य के रूप में कार्य करता है, जिससे 'संघवाद-विहीन संघ' की स्थिति उत्पन्न हुई है, जहाँ केंद्र के पास अधिक शक्ति है और संसाधनों के बंटवारे में असमानता है, जिसके परिणामस्वरूप संघर्ष और अस्थिरता हुई है।

उपनिवेशोत्तर अनुभवों से अंतर्दृष्टि

1. **संघवाद एक प्रक्रिया है, अंतिम उत्पाद नहीं:** कोई भी संघीय प्रणाली पूर्ण नहीं होती; यह हमेशा विकसित होती है और उसे देश की विशिष्ट ऐतिहासिक और सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों के अनुसार अनुकूलित करना पड़ता है।
2. **संरचना बनाम वास्तविकता:** एक संघीय संविधान होने का मतलब यह नहीं कि व्यवहार में भी संघवाद लागू हो। केंद्रीकरण की प्रवृत्तियां इसे विफल कर सकती हैं, जैसा कि नाइजीरिया में देखा गया है।
3. **जातीय-धार्मिक विविधता का प्रबंधन:** ब्राजील की विकेंद्रीकृत प्रणाली और नाइजीरिया की केंद्रीकृत प्रणाली दोनों ही विविधता को संभालने की कोशिश करती हैं, लेकिन नाइजीरिया में जातीय पहचान और संसाधनों पर नियंत्रण की लड़ाई ने संघर्ष को जन्म दिया है।
4. **संस्थागत ढाँचे और संसाधन:** प्रभावी संघवाद के लिए स्पष्ट शक्ति विभाजन, स्वतंत्र न्यायपालिका, और संसाधनों के उचित और न्यायसंगत बंटवारे के लिए मजबूत संस्थागत ढांचे (जैसे ब्राजील में विकेंद्रीकरण और नाइजीरिया में संघीय चरित्र सिद्धांत की तलाश) की आवश्यकता होती है।
5. **संतुलन की आवश्यकता:** राष्ट्र निर्माण और क्षेत्रीय/स्थानीय पहचान के बीच संतुलन बनाना महत्वपूर्ण है। अत्यधिक केंद्रीकरण या अत्यधिक स्वायत्तता दोनों ही समस्याग्रस्त हो सकते हैं।

सत्रीय कार्य-11

निम्न मध्यम श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का है।

3) तुलनात्मक राजनीति में संस्थागत दृष्टिकोण (Institutional Approach) की प्रमुख विशेषताओं को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : तुलनात्मक राजनीति में संस्थागत दृष्टिकोण (Institutional Approach) की मुख्य विशेषताएँ हैं: यह **औपचारिक राजनीतिक संस्थाओं** (विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका) की संरचनाओं और कार्यों का तुलनात्मक अध्ययन करता है, **कानूनी और संवैधानिक ढाँचों** पर जोर देता है, शासन के परिणामों को समझने के लिए संस्थाओं की भूमिका का विश्लेषण करता है, और **परंपरागत रूप से गैर-औपचारिक व्यवहारों को छोड़ता** है; हालाँकि, आधुनिक 'नव-संस्थावाद' में नियमों, मानदंडों और संस्कृति के प्रभाव को भी शामिल किया जाता है।

संस्थागत दृष्टिकोण की प्रमुख विशेषताएँ:

1. **औपचारिक संस्थाओं पर ध्यान:** यह दृष्टिकोण मुख्य रूप से राज्य की औपचारिक संस्थाओं (जैसे संसद, सरकार, अदालतें) और उनके संविधानों पर केंद्रित होता है, न कि व्यक्तियों के व्यवहार पर।

2. **संरचना और कार्य:** यह इन संस्थाओं की बनावट (structure) और वे क्या कार्य करती हैं (functions) का तुलनात्मक अध्ययन करता है, और उनके बीच के संबंधों को समझने का प्रयास करता है।
3. **कानूनी-संवैधानिक ढाँचा:** यह राजनीतिक व्यवस्था के कानूनी और संवैधानिक आधारों को महत्वपूर्ण मानता है, क्योंकि ये शासन के तरीकों को परिभाषित करते हैं।
4. **वैज्ञानिक और व्यवस्थित:** यह तुलनात्मक अध्ययन को अधिक वैज्ञानिक और व्यवस्थित बनाने का प्रयास करता है, जिसमें कार्य-कारण संबंधों की खोज की जाती है।
5. **वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक:** परंपरागत रूप से यह संस्थाओं का केवल वर्णन करता था, लेकिन आधुनिक दृष्टिकोण समस्याओं का विश्लेषण और व्याख्या भी करता है।
6. **ऐतिहासिक संदर्भ का महत्व:** यह संस्थाओं के विकास और उनके ऐतिहासिक संदर्भ को समझने पर जोर देता है।
7. **नव-संस्थावाद (Neo-institutionalism) का विकास:** पारंपरिक दृष्टिकोण की सीमाओं (जैसे गैर-औपचारिक व्यवहारों की उपेक्षा) को दूर करने के लिए, नव-संस्थावाद नियमों, मानदंडों, संस्कृति और संज्ञानात्मक संरचनाओं के माध्यम से संस्थागत परिवर्तन और एजेंटों के व्यवहार को समझने की कोशिश करता है, जिससे यह अधिक व्यापक और सूक्ष्म बन गया है।

संक्षेप में, संस्थागत दृष्टिकोण राजनीतिक संस्थाओं के माध्यम से शासन की समझ प्रदान करता है, और समय के साथ यह अधिक व्यापक और सूक्ष्म होता गया है ताकि राजनीतिक व्यवहार और परिणामों पर संस्थाओं के गहरे प्रभावों को समझा जा सके।

4) ब्रिटिश संविधान व्यवस्था में कानून के शासन (Rule of Law) के महत्व और सीमाओं पर चर्चा कीजिए।

उत्तर : ब्रिटिश संविधान में कानून का शासन (Rule of Law) एक **बुनियादी सिद्धांत** है जो सरकार को कानून के दायरे में रखता है, मनमानी शक्ति पर रोक लगाता है, सभी को कानून के समक्ष समान मानता है, और निष्पक्ष सुनवाई सुनिश्चित करता है, जिससे नागरिकों के अधिकारों और स्वतंत्रता की रक्षा होती है, जैसे मैग्ना कार्टा से विकसित हुआ; हालाँकि, इसकी सीमाएँ भी हैं, जैसे संसदीय संप्रभुता (Parliamentary Sovereignty) और अलिखित संविधान के कारण शक्तियों के दुरुपयोग की संभावना, और व्यवहार में, **न्याय तक पहुँच की लागत (जैसे न्यायाधिकरण फीस)** या राष्ट्रीय सुरक्षा के नाम पर कुछ शक्तियों का प्रयोग इसके प्रभाव को कम कर सकता है, जिससे सिद्धांत और व्यवहार के बीच अंतर पैदा होता है.

कानून के शासन का महत्व (Importance of Rule of Law)

- **सरकार पर नियंत्रण:** यह सुनिश्चित करता है कि सरकार अपनी शक्तियों का प्रयोग केवल कानूनी आधार पर करे और कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर न हो, राजा भी कानून के अधीन है, जैसा कि मैग्ना कार्टा (1215) से स्थापित हुआ.
- **मनमानी शक्ति पर अंकुश:** अधिकारियों को व्यक्तिगत स्वतंत्रता में हस्तक्षेप करने के लिए कानूनी औचित्य की आवश्यकता होती है, जिससे मनमानी कार्रवाइयों पर रोक लगती है.
- **नागरिकों के अधिकारों की रक्षा:** निष्पक्ष सुनवाई का अधिकार (Right to Fair Hearing) और मौलिक अधिकारों की गारंटी देता है, जिससे नागरिकों के अधिकारों की रक्षा होती है.

- **लोकतंत्र का आधार:** यह एक स्वस्थ लोकतंत्र और न्यायपूर्ण समाज के लिए आवश्यक है, जो संपत्ति अधिकारों और अनुबंधों को लागू करने में मदद करता है.
- **संवैधानिक सिद्धांत:** ए.V. डाइसी (A.V. Dicey) ने इसे संसदीय संप्रभुता के साथ ब्रिटिश संविधान के दो स्तंभों में से एक माना है.

कानून के शासन की सीमाएँ (Limitations of Rule of Law)

- **संसदीय संप्रभुता:** ब्रिटिश संसद के पास कानून बनाने की अंतिम शक्ति है, और वह खुद को कानून के दायरे से ऊपर रख सकती है, जिससे कानून के शासन की मौलिक अवधारणा को चुनौती मिलती है.
- **अलिखित संविधान:** ब्रिटेन का अलिखित संविधान होने के कारण, कानून के शासन की व्याख्या और अनुप्रयोग में अस्पष्टता आ सकती है, जिससे सत्ताधारी दल इसका फायदा उठा सकते हैं.
- **व्यवहारिक चुनौतियाँ:**
  - **न्याय तक पहुँच:** उच्च न्यायाधिकरण फीस के कारण आम लोगों को न्याय पाने से वंचित किया जा सकता है, जैसा कि 2013 के रोजगार न्यायाधिकरण फीस के मामले में देखा गया, जिसने महिलाओं को असमान रूप से प्रभावित किया.
  - **'अर्थपूर्ण' निष्पक्ष सुनवाई की कमी:** कभी-कभी "अर्थपूर्ण" निष्पक्ष सुनवाई (Meaningful fair hearing) की कमी देखी जाती है, जहाँ प्रक्रियाएँ न्यायपूर्ण लग सकती हैं, लेकिन परिणाम निष्पक्ष नहीं होते.
- **"पतली" बनाम "मोटे" व्याख्या:** कानून के शासन की "पतली" (औपचारिक) व्याख्या के बजाय "मोटे" (मूलभूत) व्याख्या के तहत, सरकार की आदर्श विशेषताओं की एक सूची बन सकती है, जिससे यह अवधारणा बहुत व्यापक हो जाती है और इसकी सारगर्भित प्रकृति खो जाती है.
- **राष्ट्रीय सुरक्षा और आपातकाल:** युद्ध या राष्ट्रीय सुरक्षा के समय, कुछ कानूनों (जैसे बिना मुकदमे के हिरासत) का उपयोग किया गया है, जो कानून के शासन के सिद्धांतों को कमजोर करते हैं.

संक्षेप में, कानून का शासन ब्रिटिश संवैधानिक व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण स्तंभ है, लेकिन संसदीय संप्रभुता और व्यावहारिक चुनौतियों के कारण, यह एक आदर्श बना रहता है जिसकी निरंतर रक्षा और व्याख्या की आवश्यकता होती है.

5) निर्भरता सिद्धांत (Dependency Theory) के संदर्भ में ब्राज़ील द्वारा अपनाई गई विकास रणनीतियों का परीक्षण कीजिए।

उत्तर : निर्भरता सिद्धांत (Dependency Theory) के अनुसार, ब्राज़ील ने औपनिवेशिक काल से ही कच्चे माल का निर्यातक और औद्योगिक वस्तुओं का आयातक बनकर विकसित देशों (केंद्र) पर निर्भरता की संरचना अपनाई, जिससे आंतरिक असमानता बढ़ी; हालाँकि, 1930 के बाद, 'आयात प्रतिस्थापन औद्योगीकरण' (ISI) जैसी रणनीतियों से राज्य ने महत्वपूर्ण क्षेत्रों में निवेश कर इस निर्भरता को तोड़ने और 'निर्भर विकास' (Dependent Development) हासिल करने की कोशिश की, लेकिन अंततः नव-उदारवादी नीतियों के साथ यह निर्भरता पूरी तरह खत्म नहीं हुई, बल्कि नई शैलियों में परिवर्तित हो गई, जिसमें राष्ट्रीय हित और वैश्विक व्यवस्था के बीच संतुलन साधने का प्रयास किया गया।

निर्भरता सिद्धांत और ब्राज़ील की प्रारंभिक स्थिति

- **औपनिवेशिक विरासत:** पुर्तगाली उपनिवेश के रूप में ब्राज़ील गन्ने, सोने और कॉफी जैसे कच्चे माल का निर्यातिक था, जो [[ब्राज़ील के विकास की गतिशीलता (Dynamics of Dependency and Development in Brazil)]] के अनुसार निर्भरता सिद्धांत का एक क्लासिक उदाहरण था, जहाँ आंतरिक असमानता और बाहरी पूंजी पर निर्भरता गहरी जड़ें जमा चुकी थी।
- **संरचनात्मक निर्भरता:** यह मॉडल ब्राज़ील को 'परिधि' (Periphery) और यूरोपीय देशों को 'केंद्र' (Core) के रूप में देखता था, जहाँ केंद्र को अधिक लाभ होता था और परिधि को प्राथमिक वस्तुओं के उत्पादन तक सीमित रहना पड़ता था।

ब्राज़ील की विकास रणनीतियाँ

आयात प्रतिस्थापन औद्योगीकरण (ISI - Import Substitution Industrialization) (1930-1960s):

लक्ष्य: विश्वव्यापी आर्थिक संकट (महामंदी) के बाद, ब्राज़ील ने कच्चे माल के निर्यात पर निर्भरता कम करने के लिए औद्योगिक वस्तुओं का घरेलू स्तर पर उत्पादन शुरू किया।

राज्य की भूमिका: सरकार ने स्टील, तेल, दूरसंचार और बिजली जैसे प्रमुख क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर निवेश किया, जिससे आंतरिक बाज़ार मजबूत हुआ और निर्यात टोकरी (export basket) में बदलाव आया।

निर्भर विकास (Dependent Development): इस रणनीति ने ब्राज़ील को 'निर्भर विकास' के मार्ग पर धकेल दिया, जहाँ विकास हुआ, लेकिन यह अभी भी विदेशी पूंजी और प्रौद्योगिकी पर निर्भर था, जिससे घरेलू अभिजात वर्ग और विदेशी पूंजी के बीच एक सहजीवी संबंध बना रहा।

नव-उदारवादी नीतियाँ (Late 1980s onwards):

निजीकरण: ब्राज़ील ने राज्य-स्वामित्व वाले उद्यमों में सरकार की हिस्सेदारी कम की और प्रबंधन से हाथ खींचा, जिससे अर्थव्यवस्था का उदारीकरण हुआ।

बाह्य निर्भरता का पुनर्गठन: इस दौर में, राज्य की भूमिका कम हुई, लेकिन ब्राज़ील की वैश्विक अर्थव्यवस्था और विदेशी निवेश पर निर्भरता पूरी तरह खत्म नहीं हुई, बल्कि इसने एक नए रूप ले लिया।

निर्भरता सिद्धांत के संदर्भ में मूल्यांकन

- **आंतरिक और बाह्य कारक:** निर्भरता सिद्धांत ने ब्राज़ील के अविकसितता के कारणों में बाहरी शोषण के साथ-साथ आंतरिक संरचनाओं (जैसे भूमि का संकेंद्रण और भ्रष्टाचार) की भूमिका पर भी जोर दिया, क्योंकि इन्हीं संरचनाओं ने प्राथमिक निर्यात मॉडल को बनाए रखा।
- **अविकसितता का विकास:** विद्वानों (जैसे आंद्रे गुंडर फ्रैंक) ने तर्क दिया कि यह कोई 'अविकसितता' नहीं, बल्कि 'अविकसितता का विकास' (Development of Underdevelopment) था, जहाँ ब्राज़ील का विकास वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था के भीतर एक अधीनस्थ भूमिका में हुआ।

सत्रीय कार्य-III

निम्न लघु श्रेणी प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों (प्रत्येक) में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6) राजनीतिक समाजीकरण और राजनीतिक संस्कृति (Political Socialisation and Political Culture)

उत्तर : **राजनीतिक समाजीकरण** वह प्रक्रिया है जिससे व्यक्ति राजनीतिक मूल्यों, विश्वासों और व्यवहारों को सीखते और अपनाते हैं, जबकि **राजनीतिक संस्कृति** उन साझा विचारों, विश्वासों और मूल्यों का समूह है जो एक समाज में राजनीतिक व्यवस्था को अर्थ और दिशा देते हैं; ये दोनों एक-दूसरे से जुड़े हैं क्योंकि समाजीकरण वह माध्यम है जिसके द्वारा लोग राजनीतिक संस्कृति को विरासत में लेते हैं और उसे अगली पीढ़ी तक पहुंचाते हैं.

राजनीतिक समाजीकरण (Political Socialisation)

- **अर्थ:** यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने परिवार, स्कूल, मीडिया और दोस्तों जैसे कारकों (एजेंटों) के माध्यम से राजनीतिक मूल्यों, विचारों और दृष्टिकोणों को विकसित और आत्मसात करते हैं.
- **एजेंट:** परिवार, स्कूल, मीडिया, सहकर्मी समूह और धार्मिक/व्यावसायिक संगठन.
- **प्रक्रिया:** यह बचपन में शुरू होती है और जीवन भर चलती रहती है, जिससे व्यक्ति अपनी राजनीतिक पहचान बनाते हैं और राजनीतिक व्यवस्था में अपनी भूमिका समझते हैं.
- **उद्देश्य:** नागरिकों को राजनीतिक व्यवस्था में सक्रिय रूप से भाग लेने और राजनीतिक संस्कृति को बनाए रखने के लिए तैयार करना.

7) समकालीन समय में चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ

उत्तर : समकालीन चीनी कम्युनिस्ट पार्टी (CCP) के सामने प्रमुख चुनौतियाँ आर्थिक धीमी गति, बढ़ता कर्ज, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता, पर्यावरण प्रदूषण, < 'वन बेल्ट वन रोड' (BRI) और दक्षिण चीन सागर जैसे मुद्दों पर भू-राजनीतिक तनाव, असंतोष का दमन और लोकतांत्रिक देशों से वैचारिक दबाव हैं, जिससे पार्टी को आर्थिक विकास और सामाजिक स्थिरता के बीच संतुलन बनाना पड़ रहा है, जबकि सत्ता पर अपनी पकड़ मजबूत रखनी है।

आंतरिक चुनौतियाँ (Internal Challenges):

1. **आर्थिक संतुलन:** आर्थिक विकास दर धीमी होने, बढ़ता कर्ज और बढ़ती आय असमानता को संभालना एक बड़ी चुनौती है, जिससे सामाजिक असंतोष बढ़ सकता है।
2. **भ्रष्टाचार:** पार्टी के भीतर भ्रष्टाचार एक लगातार समस्या है, जिससे पार्टी की वैधता (legitimacy) कम होती है; भ्रष्टाचार विरोधी अभियान चलाए जाने के बावजूद यह जारी है।
3. **असहमति और मानवाधिकार:** असहमति को दबाना, मानवाधिकारों का उल्लंघन (जैसे उइगरों और हांगकांग में) और सेंसरशिप अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू स्तर पर आलोचना का कारण बनती है।

8) उदारवादी बनाम समाजवादी लोकतंत्र (Loberal vs. Socialist Democracy)

उत्तर : लोकतंत्र की अवधारणा को विभिन्न विचारधाराओं ने अपने-अपने दृष्टिकोण से परिभाषित किया है। इनमें **उदारवादी लोकतंत्र** और **समाजवादी लोकतंत्र** दो प्रमुख रूप हैं। दोनों का उद्देश्य जनता की भागीदारी और शासन की वैधता है, परंतु उनके **आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण** में मौलिक अंतर है।

1. उदारवादी लोकतंत्र (Liberal Democracy)

उदारवादी लोकतंत्र का आधार **व्यक्तिगत स्वतंत्रता**, **नागरिक अधिकारों** और **कानून के शासन** पर है।

प्रमुख विशेषताएँ:

- **व्यक्ति की स्वतंत्रता सर्वोपरि** (वाक्, प्रेस, धर्म, संगठन की स्वतंत्रता)
- **बहुदलीय प्रणाली** और नियमित, निष्पक्ष चुनाव
- **निजी संपत्ति और मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था** का समर्थन
- **संवैधानिक शासन** और शक्तियों का पृथक्करण
- **अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा**

2. समाजवादी लोकतंत्र (Socialist Democracy)

समाजवादी लोकतंत्र का केंद्र **सामाजिक और आर्थिक समानता** है। यह मानता है कि राजनीतिक स्वतंत्रता तब तक अधूरी है जब तक आर्थिक न्याय न हो।

प्रमुख विशेषताएँ:

- **सामूहिक हित को प्राथमिकता**
- **आर्थिक समानता और सामाजिक न्याय** पर बल
- **राज्य की सक्रिय भूमिका** (संसाधनों का नियंत्रण/नियमन)
- **योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था** या कल्याणकारी राज्य
- कई बार **एकदलीय व्यवस्था** (परंतु आवश्यक नहीं)

9) ब्रिटिश संसद में लॉर्डस सभा (House of Lords) की भूमिका

उत्तर : ब्रिटिश संसद में लॉर्ड सभा (House of Lords) का मुख्य काम **कानूनों की समीक्षा करना, सरकार के कामकाज की जाँच करना और महत्वपूर्ण मुद्दों पर बहस करना** है; यह विधेयकों (laws) को संशोधित (amend) कर सकती है, उन्हें एक साल तक रोक सकती है, लेकिन वित्तीय विधेयकों (money bills) पर इसका अधिकार सीमित है और यह सरकार के चुनावी वादों (electoral mandate) का विरोध नहीं कर सकती, जिससे यह हाउस ऑफ कॉमन्स के साथ मिलकर विधायिका (legislature) में संतुलन बनाती है।

मुख्य भूमिकाएँ और कार्य:

1. **कानून बनाना (Legislation):**
    - यह हाउस ऑफ कॉमन्स द्वारा पारित विधेयकों की गहराई से जाँच करती है और उनमें संशोधन (amendments) सुझाती है।
    - यह अपने स्वयं के विधेयक भी पेश कर सकती है, जो कॉमन्स में जाते हैं।

- यह किसी विधेयक को पारित होने से अधिकतम एक साल तक रोक सकती है (वित्तीय विधेयकों को छोड़कर)।

10) वालरस्टीन का वर्ल्ड सिस्टम विश्लेषण (Wallerstein's World System Analysis)

उत्तर : इमैनुएल वालरस्टीन का वर्ल्ड सिस्टम एनालिसिस (विश्व प्रणाली विश्लेषण) एक सामाजिक-आर्थिक ढाँचा है जो दुनिया को एक ही पूंजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था के रूप में देखता है, जहाँ देशों को उनकी आर्थिक स्थिति के आधार पर तीन भागों में बांटा गया है: **कोर (Core)** (विकसित, धनी देश), **परिधि (Periphery)** (विकासशील, गरीब देश जो कच्चे माल देते हैं) और **अर्ध-परिधि (Semi-Periphery)** (दोनों की विशेषताएँ), जो एक-दूसरे का शोषण करते हैं और वैश्विक असमानता पैदा करते हैं। यह सिद्धांत बताता है कि यह प्रणाली लंबे समय से चली आ रही है और वैश्वीकरण और पूंजीवाद के शोषणकारी स्वरूप को समझाता है।

मुख्य अवधारणाएँ (Key Concepts):

1. **कोर (Core):**
   - विकसित, धनी, सैन्य रूप से मजबूत देश।
   - उच्च-तकनीकी, विविध उत्पादन और उच्च मजदूरी।
   - परिधि और अर्ध-परिधि का शोषण करते हैं (जैसे कच्चे माल का आयात, तैयार माल का निर्यात)।
   - *उदाहरण*: पश्चिमी यूरोप, संयुक्त राज्य अमेरिका (ऐतिहासिक रूप से)।

IGNOU IQ Hindi

ZOOM CLASS

All courses are available

PACKAGE DETAILS

- Free Study Materials
- Practice sets (HardCopy)
- Revision before Exams
- Monday to Friday Classes

JOIN NOW

CONTACT US
6205717642/8521027286

www.ignouiqhindi.Com

GUESS PAPER

5 Years Previous Questions Answers

GUESS PAPER

BPSC - 103

Disclaimer for this Guess Paper/Notes/Sample Papers By IGNOU IQ HINDI (IIH)

This PDF contains previous year questions asked by IGNOU. This PDF has been created to help you in the exam. However, It is important to note the following :

A. No Guarantee of Examination Questions: We do not guarantee that the questions presented in this sample paper will appear in your actual exams. The content is for practice purposes only.

B. Book Study Recommended: To achieve good marks in your IGNOU exams, it is highly recommended that you thoroughly study the prescribed course materials and textbooks. Relying solely on this sample paper may not be sufficient for exam success.

C. Use as a Study Materials : Use this sample paper as a supplementary study aid to test your knowledge and exam preparedness.

D. Self-Responsibility: Your performance in exams is your responsibility, and success depends on your dedication to studying the course material.

हमारे यहाँ IGNOU के सभी COURSES के Study Materials जैसे ; Guess Paper/Book Notes/ Practice Sets बहुत ही सरल भाषा में उपलब्ध है.

Our Website
Www.ignouiqhindi.Com

Phone Number
6205717642/8521027286